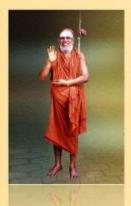
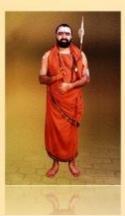
रुर रुर मद्भर एय एय मर्द्रा







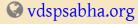


म्-कम्बुम्य नभ

मीभर्ग-मुर्म-मुर्ग-रुगवसुर-परभुरागउ-भुलाभुष्य-भवहः-पी०भा म्-िक म्झ-क भके ए-पी०भा एगम् १-मी-मद्भग छार -भाभि-मीभ०-भंभू नभा

वॅम्-णम्-माभु-परिपालन-मरा







॥मी-एचन्-भगभुडी-मी छरण-लभ्-५ए-५म्रुडिः॥

रुर रुर मक्दर

॥मी-एचन्-भगभुडी-मीग्गगल-लभु-प्रर-पम्नुडिः॥

५०७७ के पी-कुभुः - ७१ द्रां सुन-मुक्त-उवैम्मी मन्द्रग-भेवद्भगः ७५३३ (11.03.2025)

(ग्राभु) [विष्विम्वराप्रष्टं मुङ्गा]

> मुक्ताभगणां विभूमिनवंक परुदुस्भा। प्भन्वरनं पृच्या भवविभूपमान्या।

प्प्पाना मुघभा है हुः + हुमुवः भवरेभा। (मप उपम्मु, पृपाबराना ग्रहीर्रा)

भभेपा ३मभभुम्, रिउब बम्नारा मीपर मेम्वर पीटुर्न, मुरु मैरुन भूक्र समृद्धा मान्य स्विडी बपरा च म्वेडवराष्ठकले, वैवभ्रेडभञ्च मञ्चाविंमडिउभे कलियुगे प्षमे पार्रे एभ्रेम्वीपे रुपउवद्वे ठर उपिए भेरे मिक्ल पाच्च मिभाना वरुभाने बावकारिकाल प्रवासीनं पक्षः भंवद्भगणं भण्ने मेरुन-नाभ-भंवद्भग्ने उङ्गग्यण मिमिग-एउँ भीन-भामे मुक्का-**ं उंबेर्म्** मुरुडिचे **रुगु** वाभरवृक्तायां भिणा-निब्द्युक्तयां **एडि**-वेगवृक्तयां केला ब-करण युक्त या भागितं - गुण - विमिधा या भागि युक्ते मिन्

- उङ्गापाद्ध-नब्द् एन्गमे मृतिसुदानं मीभडा्-मद्भग-विस्चिन्-भगभुडी-मंबभीन् प्भा मभा कं एग मुरु पं मी ग्र-म्यः-म्रेग्-मिमू ग्रं,
- ० उँः भद्वलियां भन्ने भं लेक-बिभार्-काराण वर्म-माभारि-मभ्राय-पेभण-कारा १० विविष- इं - या राया म मिविष्ठया मभ्रम्
- ० काभकेएि-गुरु-परभूरायां काभकेएि-रुरु-एनानाभा मग्रम्भल-रावमुम्न-ए, एउरा-ठिति-भिम्नुरं, परम्पर-विक्भट्ट-भिम्नुरं,
- राजियानं भन्नास्तानं विभ्ननितृ द्वि-पृत्रक-मङ्गाद्य-पृतृ द्वि-प्वानः ग्रिक-म्भिक-म्रुम्य-प्पृर्भा, ममङ्गर्देष्टः नित्रुर्भ
- ० राग डीया नं भनु उः भना उन-भभू रा ये म्स्र-रुट्टेः मिरुत् मूर्त
- o भर्तेषं म्विपमं ग्रुभ्माभा मर्तेषं ग्र प्राप्य-वज्ञाय्यभा म्रीगृ-युक्-भाष-प्यीवन-मवा भुरू भा

वॅम्-णम्-माभु-परिपालन-मरा

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4** vdspsabha@gmail.com vdspsabha.org

रुर रुर मक्कर

4

एय एय मर्रा

० मभूकं भरू-मुप्तभानं एम्-मुर्-काभ-भेत्र-ग्रुप-ग्राद्विण-पृत्तधार्म-मिम्रुरं विवेक-वैरागृ-मिम्रुरं

मी-स्यिन्-भरभुडी-मी ग्ररण-पीटुर्न मी-स्यिन्-भरभुडी-मी ग्ररण-म्ररण पन-भर्नेद्विव यम मिन्-शुन-म्रवण्ठन मि-भेरमे प्राप्तः मी-स्यिन्-भरभुडी-मी ग्ररण-प्रदं किरिमृ उम्हें कलम प्रदं ग्र किरिमृ [कलम प्रदं मुद्वाः]

॥पृप्तभा॥

म्डिभ्।डिप्राण्याभा मुलयं कर्ण्ण्लयभा। नभाभि रुगवश्चारमञ्जूरं लेकमञ्जरभा॥

पिरिट्ट भें नं वए एः भि्रिं ग्रं व्यानां रुपर्ये प्रमिनाः प्रमिनाः प्रमिनाः प्रमिनाः भए भृति वागाः स्वानां एक भाषाः विद्यानाः प्रमिनाः विद्यानाः प्रमिनाः विद्यानाः प्रमिनाः विद्यानाः प्रमिनाः विद्यानाः प्रमिनाः विद्यानाः प्रमिनाः विद्यानाः विद्य

वें म- ए म्-माभु-परिपाल न-मरुप

© 9884655618 💋 © 8072613857 💋 vdspsabha@gmail.com 🔮 vdspsabha.org

मी-एचन्-भरभुडी-मी एरएर्डे नभः, महराना मभर्याणि प्रिः प्रएया भि

॥म्भिम्स्विन्,भरभ्रुडीम्पियरणभ्रुड्डरमउनाभावलिः॥

एयापृया प्भिम्नन्-भगभृहै नभे नभ उभेपष्ठ-ग्म-गञ्ज-मभुउच्च नभे नभः भक्षा रेव-भकी-रेव-उनुस्य नभे नभः भरभुडी-गर्र-मुक्ति-भुक्ता-रङ्गाय ड नभः प्रकृष्ट कि ए-नी उ-के भाग व नमे नभ भण्राच्चन-गएरप्ट॰पीउ-वेम्स व उ नभ भ्व-त्रु-पीर्णिं उमिषा पृप्यकाय नमे नभ उपैनि ४-गुरु- इ.उ-वैरुवाय नभे नभः गुबाह्र-पालन-गउ-पिउ-मङ्गाय उँ नभः एयार् भीत्र - उरीयाम्भाय नभे नभ एयापृया भु-गुरु मीबिउ य नभे नभः वृक्ष्मस्मित लब्ब-प्वृष्ट्य नभे नभः भव-डीऱ्-उए लब्ब-एउऱ्गम्भिल नभः काधाय-वाधा-मंबीउ-मगीगाय नभे नभः वा कृ-ऋग्रा दें - प्रिम्-भ्रज्ञा वा कृत्य दें नभः निटं गुरु-पर्-स्नन्न-निड-मीलाव उनभ लील या वाभ-फभुग्ग्-एउ-म्प्रव उ नभः **रुक्नेपरूउ-विल्वाम्पि-भाला-एक्न नभे नभः** सभीग-उलभी-भाला-कुधिउच नभे नभः काभकेए-भकापीका पीम्राय नमे नभः भ्तु ३-न्-रूप्ट काम-निवामाय नमे नभः पारानउ-एन-बिभ-भागकाय नभे नभः ह्नन-**र**िनेड्व-भ**ए**ग-राध्याण्य नमे नभ गुरुपिया-बृद्धभुइ-बृद्धि-बर्चे नभे नभ एगम् इ-विशिष्य भन्ड भन्म नभः रुपडीय-मम्प्राप्य-परिइप्ट्रेनभेनभः

वॅर्स-एर्-मप्-परिपालन-मरा

© 9884655618 **②** 8072613857 **《**



भटा मैल्ला स्थि-ग्एन उप-मृम्या व न में न भः भवर् भभ-रावापु-भौक्रमाय नभे नभः वीबा-विविमिउमि ४- छा वृका य नभे नभः म्-काभकेए-पीरण्-निकेराय नभे नभ का रुए-पुर-पुरू नु:कर एव नमें नभ ग्रन्मापर-ग्रिङ्गक्राक्राक्य नभे नभ प्रिंड-भ्र-गुरुडुंभ-भद्भल्य वर्भे वभः दि-वारं ग्रन्भेलीम-प्रस्काय नभे नभ काभाबी-पूर्व-मंलीव-भावभाव वभेवभः म्निम्निउ-भूरू-गघ-वाफिउ भ्राय उ नभ पित्र भुजापिला पुनी-उए द्वाय नमे नभ **७** १३-६ चिउ-न् ट्रॅम-रूभ-पाम्य उ नभः वैद्वराम्यान्य विद्याय नमे नभः कामृं मी-काभकेषीमालय-कर् नभे नभः का भाकुभालय-भूक-म्हारकाय नमें नभ कुभुष्ठिषेक-भन्नीपुग्लय-वृग्डाय उँ नभः काल एं मञ्चर-यमः-भुभुकर् नभे नभः ग एग ए।पृ-ग्रेल भृ भू रू-भे लि- क् उ नभः गै-माला-निम्निडि-मुड-गै-रबाय नभे नभ डीर् ५ रुगवश्च र-मृद्यलय-मुर नभः भत्रउ मद्भग-भ०-भूग्यकाय नभे नभः वैम्-माभुगपीठि-गुप्रि-मीबिङाय नभे नभ रिज्लुं भून्-गिटापूल व-कर् नभे नभ रुगरीय-कलाग्राग-पेषकाय नमे नभः भुँ३-नीउ-ग्नू-५००-५ग्रि-म्य नभे नभ युज्ज फिर-फरारुम-ममियु नभे नभ भृष्टुमु-नियभेनीउ-पूरन-वेगाय उनभः पर-णभ-पराकाम-लीन-ग्रिङ्ग य उ नभः यनारउ-उपमृपु-मिवृ-मेराय उ नभः मभामि-धर्ग-गुल्ल-यउ-भ्र-ग्रिश्च नभे नभः मभमु- रुकु- ए न उ - र ब क च न भे न भ

वैम्-एम्-मप्यु-पिर्मिपलन-मर्हा

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**

भ्रु-मार्गीर-प्रा-प्रउ-रूभ-रामे नभे नभ मिय-उपु-भूक-पह-उलु-द्रालाय उ नभः विदुरि-विलमसूर्-लल एय नभे नभः पित्र र् -गण-मंमृतृ-परः क्राय नमे नभः मुगुगि-म्बल्ल्पेज-१उ-ग्रिगुग्य उ नभः ग्भील-एनउ-तृष्टि-कल्काय नभे नभः एनकलुए-रगम-गरुगय नमे नभ एनएगरण्भिक्ति-ए वका व नमें नभ मद्भीपः म्पष-मङ्गाय नभे नभ मन्ने उ-मा भु-र बा यां भूल या व नभे नभः प् गृ-प्री गृ-विस्न न-वेस्क व न भे न भः गैंबाल-कल्पी-भंगक्-प्रील्ण्य नभे नभः रुगवड् - पृष्टु-पारानाभपरानुउच नभः भ्र-पार-याउया पुउ-ठार उप नमे नभ नेपाल-दुप-भिठ-प्रमाद्याच नभे नभः गिन्डि-बल्प-मभुक्त-मद्गल्य नमे नभ यमा ऋ-का मुन्ता - वजे अकाय नमे नमः भएग राधण-पीउ-भ्राम् उच नमे नभः भवरः मुरुभिन्दुः मंभकः य नमे नभः ग्रिडीयभाष्य-एनडा-भन्भाय नभे नभ मर १९ गउ-मी न गु- परि इ उ न भे न भ में ठागृ-एनका पा म्न-वीब्ल्व नमें नभ म्बर्मायुर-रुडा-उप-माभकाय नभे नभः म्दं प्ट-विभउ-व् उ-मभन्न य-क्र नभः निरमुलमू-भेजामा-विक्याय नभे नभः मन्गन्-द्राभाद्म-पद्म-वेगाव उनभ मनु न ऋ उ-भ इल् विधि र व न भे न भ भरा-रुभन्।पाद्भापनीउपमिष-मुग्ने नभः नवधिरुभागाद-मद्भगय नभे नभः विविण ४-एन-५७ रू-भू-गुरु गउँ नभः

वैम्-एम्-मप्यु-पिर्मिपलन-मर्हा

र्षेड्-याङ्ग-वृग्ए-१,५-एन-भ्रानुगय डॅ नभः विभिष्ठ-पे भू-भम्,म-म्मिक य नभे नभ मभत्तरा-ब्र-डीग्राम्-वारा-द्रभाव उ नभः मी-ग्रन्मापर-ग्रीरिक-मिध्य उत्रभ गुरैग्रुम्त्-गउ-भद्गल्-िक्यात्रय-कुउँ नभः गुरु-वद-क्पा-लब्ब-मभ-ठावाय उँ नभः वेग-लिङ्गेन्-भेलीम-५एकच नभे नभ ववैत्मून प-एन म्य-एव नभे नभः मत् द्विकेपम् उत्तं त् द्वि-माय नमे नभः भु-गुरुपऋषा विम्वविद्गलय-मुड नभः विम्व-गधीय-भम्त-ग्तु-केमागाग-न्ड नभः विद्वालयेषु मद्दा-एम्-वे ए-द्वार्च नभे नभः कैलामे रुगवश्च ६-भृग्नि-भृग्पक उँ नभः कैलाम-भारमभग्ने-याद्ग-पुर-क्रः राभः काभरुप वैद्वाएम्-नामालय-मुउ नभः मिस्वार प्रापकानां भानविर् नभे नभ भका रुम् दिरम् मि-उँ धिउँमा य उँ न भः ममनुमूउ-ग्रापिकाम्रिङाभुग्य उ नभः म्बिरागभ-गाउलं ।पूरपियः नभे नभः मिस्-मद्भगविष्य-भूमुभान-पर्मानभ

> ॥ ७ डि मि भिक्ति-ग्भा कि एत-गण तुभूमा भि-वि ग पि उ मीभस्स्चन्, भरभुडीमी एर १०० हे इरमउन भावतिः भभुत्रा॥

मुग्गार परभुरानाभावतिः

॥ भुका गाराः॥

- 1. मीभउँ ८ बिल्लभुउँ व नभः
- 2. मीभउँ विभूत नभः
- 3. मीभउँ वृक्तल नभः
- 4. मीभउँ विभिष्ठाय नभः

वैद्य-एग्न-माभु-परिपालन-मङा

- 5. मीभउँ मकुच नभः
- 6. मीभउँ परामराय नभः
- 7. मीभउँ ब्राभाय नभ
- 8. मीभउँ मुकाय नभः
- 9. मीभउँ गैं उपामा व नभः
- 10. मीभडे गैविन् रुगवसुराय नभः
- 11. मीभउँ मह्मरुगवसुमाय नभः

॥ रुगवश्चम्मिधृः॥

- 1. मीभउँ भ्रेष्यगणद्य नभः
- 2. म्भिउ पम्भपारा गाराय नभः
- 3. मीभउँ जभुभनका गाराय नभ
- 4. मीभउँ उएका गाराय नभः
- 5. मीभउँ प्षिवीणवागाराय नभः
- 6. मीभउँ भवस्र ३ ७ त् भगभु है नभः
- 7. मनुष्टुः मञ्जगरुगवस्य म-मिर्मृष्ट्रे नभः

॥ काभकेए-मुग्नारः॥

- 1. म्भिउँ मद्भारगवश्चारय नभः
- 2. मीभउँ भ्रेष्वरागाराय नभः
- 3. मीभउँ भचक्र ३८७ तुभरभुटै नभः
- 4. मीभउँ भड़कै ए-उन्,भगभुट्टै नभः
- 5. मीभउँ ऋन नन्-उन् भगभृष्टै नभः
- 6. मीभउँ मुस्र नन्-उन्, भगभुट्टै नभः
- 7. म्ीभउँ गुनन् ह्रन-उन्भगभुट्टै नभः
- 8. मीभउँ कैवलु नन्-उन्मगभुटै नभः
- 9. मीभउँ क्षणमङ्गर-उत्भगभृट्टै नभ
- 10. मीभउँ विम्नगुप-भूगम्बर-उन्भगमुटै नभः

वैम्रे-एग्न-मप्यु-परिपालन-मरा



11. म्भिउ मिक् नन्-ग्रिस्न-उन्भगसृहै नभः

- 12. म्भिउ भावकेभ-छन्,मापर-उन्,भरभुट्टै नभः
- 13. मीभउँ का श्रभी न-मिस्नुस्त-उन्,मरभुट्टै नभः
- 14. मीभउँ हैरविष्या-विद्युषन-उन्भरभुट्टै नभः
- 15. मीभउँ गी५िउ-गङ्गणग-उन्,भगभुटै नभः
- 16. मीभउँ उङ्गुलमञ्कर-उन्भगभुट्टै नभः
- 17. मीभउँ गे उ-भम्म मिव-उन्भग्न हुँ नभः
- 18. मीभउँ भुग-उन्, भगभुट्टै नभः
- 19. मीभउँ भारतपुर-विम्हाभन-उन्, भरभुटैँ नभः
- 20. मीभउँ भुकम द्वर-उन् भरभुट्टै नभ
- 21. मीभउँ एकवी-यन् ग्रुफ-उन्, भरभुटैँ नभः
- 22. मीभउँ परिपृक्तिण-उन्मरभुट्टै नभः
- 23. मीभडें भिम्नुसुष-उन्,भगभुट्टै नभः
- 24. मीभउँ केंद्रुल-ग्रियुष-उन्मग्रसृष्ट नभः
- 25. मीभउँ मिम्नार नन्भन-उन्भगसृहै नभः
- 26. मीभउँ प्रस्थन-उन्मग्रसृटैं नभः
- 27. म्भिउँ ग्रिम्बिल भ-उन्भारभुटै नभः
- 28. मीभउँ भका द्वि-उन्, भरभुट्टै नभः
- 29. मीभउँ पुरुवै ए-उन्मग्नु है नभः
- 30. मीभउँ रुक्तिवेग-वेष-उन्भगभुट्टै नभः
- 31. मीभउँ मील निणि-इङ्ग नन्भन-उन्भगभुट्टै नभः
- 32. मीभउँ प्रिम्पनन्थन् भन-धन् भगभुट्टै नभः
- 33. मीभडे राधापरमिष्ठि-मिस्स्यानन् अन-उन्भारसृहै नभः
- 34. मीभउँ छन् मापर-उन्भगभृष्टै नभः
- 35. म्ीभउँ वक्तरु ५-ग्रियुगप-७न् भगभुटै नभः
- 36. मीभउँ ग्रिक्नापानन्-उन्मक्ष्रुटै नभः
- 37. मीभउँ विम्हणन-उन्मगमुटँ नभः
- 38. मीभउँ पीरमङ्कर-उन्,भरभुट्टै नभः

वैर-एम्-माभु-पिर्यालन-मरा

रुर रुर मर्द्धर

39. मीभउँ भिम्निम्बिलाम-उन्,भरभुटैँ नभः

- 40. म् भिउ मेरुन-भक्त द्विन्द्व न भ
- 41. मीभउँ गङ्गणग-उन्,भगभृट्टै नभः
- 42. मीभउँ इङ्कानन् अन-उन् भगभृष्टै नभः
- 43. मीभउँ ग्रननू भन-इन् मगभू है नभ
- 44. मीभउ पुरूबे ए-उन्.भरभुट्टै नभः
- 45. म्भिउ परभिव-७न्भरभृटै नभः
- 46. मीभडे भार् तर्ने ए-उर्भगम् है नभः
- 47. मीभउँ छन् मापर-उन्भरभुट्टै नभः
- 48. मीभउँ मह्नैउपन् केण-उन्भगभृष्टे नभः
- 49. मीभउँ भका दिव-उन्, भगभु है नभः
- 50. मीभउँ छन् छन् भगभुट्टै नभः
- 51. मीभउ विम्नु उीर् इन्मासु है नभः
- 52. मीभउँ मङ्गगनन्-उन्भगसृहै नभः
 - ० मीभउँ मङ्गिउरका नन् य नभः
 - ० मीभउँ विम् उष्ण्य नभः
 - ० मनुष्टुः विम्हु उत्ति, नम्भगनन्, मिर्चु नुभ
- 53. मीभउँ प्रकरनन्-भम्यमिव-उन्भगसृहै नभः
- 54. म्भिउ बृभागल-भकारिब-उन्भगसृहै नभः
- 55. मीभउँ छन् छर-उन्भगभुट्टै नभः
- 56. मीभउँ भरामिकी ए-उन्भगसृहै नभः
- 57. मीभउँ परभिषव-उन्, भरभुटैं नभः
 - ० मीभउँ भम्मिवरूक्न-उन्भगभुट्टै नभः
- 58. मीभउ विम्वाणिक-मुद्भवेण-अन्भारभुट्टै नभः
- 59. मीभउँ रुगवन् भ-वेष-उन्, भरभुटै नभः
- 60. मीभउँ मह्नैउन्द्रप्काम-अन्मग्रसृहै नभः
- 61. मीभउँ भक्तम्ब-उन्,भगभुट्टै नभः

वैम्-एम्-मप्-पिर्यालन-मरा

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**

vdspsabha@gmail.com vdspsabha.org

रुर रुर मर्द्धर

62. मीभउँ मिवगीउभाला-ग्रन्मापर-उन्भरभुट्टै नभः

- 63. मीभउँ भका रिव-उन् भगभू है नभः
- 64. मीभउँ ग्रन् मापर-उन्भगभृटै नभः
- 65. मीभ**उँ मुद्रम**न-भक्तद्भव-उन्,भरभुट्टै नभः
- 66. मीभउँ छन्, मापा-उन्, भगभुटँ नभः
- 67. मीभउँ भक्तम्ब-उन्मग्नसृष्टै नभः
- 68. मीभउँ छन् मापर-उन्भरभुट्टै नभः
- 69. मीभउँ एयन् भगभुट्टै नभः
- 70. मीभउँ मद्भगविष्यवेत्भगभुट्टै नभः

मी-एचन्-भगभुडी-मीछरलं है नभः, न न विष्पिरिभल पर्पृप्ति भभर्या मि मी-एचन्-भगभुडी-मीछन्एंहे नभः, प्रथभाभाषयाभि मी-एचन्-भगभुडी-मीछारलंके नभः, मीपं मचाभि। म्-एचन्-भगभुडी-म्। एगले ने नभः, मभ्उं भजन्ते में पानीयं ए निवस्याभि निवस्ता-नरुरभा ग्रेगभनीयं मभर्याभा म्-एचन्-भगभुडी-म्। एरल्ले नभः, करुरङभुनं मभर्याभा मी-एचन्-भगभुडी-मीछ्यल्कृ नभः, भन्नल नीर्यएनं म्मयाभि। मी-एचन्-भगभुडी-मीएउल्हें नभः, प्रकिल्नभभुजना मभर्या मा मी-एचन्-भगभुडी-मीग्रालके नभः, प्रतः भभन्याभि।

॥गुरु-भुडिः॥

ठर्षे उगवसु मं ठावडी यमि।पा भिल्भा। मम्बरम्द्रीमम्द्रवे च उन वाः प्रेणकभाषा

म्ह्यहिउभागारं वर्मप्रग्रुपिलभा ग्रन्मापरवेगीन् वेगलिङ्गप्पंस्कभा॥॥

वर्षे वरमं मानं वसानं ग्रन्मापरभा। वाग्निनं वागुउं वन् विमिक्षा ग्रामणेल कभा॥॥

दिव दिन ग दिन ग रङ्गरेगुभाषप्रभा। वृष्णभरमेवं उं मील्वनं नभाभूकभागा वैद्ध-**ण**ग्न-मप्भ-पित्र पोल न-मरा

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**

☑ vdspsabha@gmail.com 🔇 vdspsabha.org

त् इत् द्विप्त् इति कारणं करणं प्रुभा।
गुरुं ने भि नडामिधनन् नं नयके विस्भा॥॥
प्रविष्णारणम् ध्नेडारं निप्णं निणिभा।
विन्रुः कं मद्भराष्ट्रं मी एवन् भरभुडी भा॥॥
भडाभिडमिर स्वस्मनं भनुविद्वभभा।

भिडाभिडमिरिम् इभक्तं भवृतिङ्गभा। मानिष्णि ने भिनि सिनुं नीडिकेकिलभा॥॥

भरभुडीगरुरउं भ्वलं भारूमिय्यभा। लक्तीवद्वंलेलरूमं नेभि उंग्रीनवद्वलभा॥ऽ॥

गिउँ रुगउँ मिमृ भिउँ रुगउँ एविन भी। वन् यिउँ भाषका नं पिउभक्वैउम्मिन भी॥७॥ ॥७उँ मीमद्भगविष्येन् भगभुडी-मद्भग्राट्य भाभिकिः विग्रियः मी-एयन् भगभुडी-म्लेकभालिका॥

॥भ्रुपि-वग्रनभा॥

- भ्रिम् म्। म्। म्। म्वापल-हुभ्याला हुर-इविभ्ं मठा-केए-द्वर-मिवउ-म्। का भाषी-द्वरी-भना प्य-म्। भाषा प्रति-एका भ्ना प्य-म्। भाषा प्रति-भना प्य-म्। किप्ति ना प्य-पा प्रति-भना प्य-म्। किप्ति ना प्य-पा प्रति-भना प्य-पा प्रति-भना प्य-पा प्रति-भना प
- गडिल उ-मण गम-भण्य-कभलामन-काभिनी-एभिल्ल-मभ्ल्ल-भिल्लिका-भालिका-निः धृनु-भकर नु-ग्रगी-भीविभिक-वादिगुभू-विष्णुभुण्णेन नु-दुन्ति लिउ-भनीिष-भग्रलानाभा
- ० मनवर उम्हें उ-विद्रा-विने ह-र भिका नं निर नुराल क्र डी क्र उ-मा नि-हा नि-हुभा भा
- ० भकल- ५ वन- ग्रक्- प्रिष्ठ पक-मी ग्रक्- प्रिष्ठ विष्टु उ-वमे ज्ल क्रु उ न भा
- ० निर्मित-भाषप्र-भप्र-कस्'केश्च एनेन विमम्मीक्तुउ-वेम्-वेम्पनु-भाज-भप्रउ-प्रिष्ठापकामाराणभा
- ० परभन्नभ-परिवृष्टका या द्वद-एग मुह-मीभ श्र-म द्वर हग वश्व या या राज्य भी
- ० गणिश्व मिकामनािकिन्नम्। भन्नाप्य न्माप्य न्माप्य न्माप्य म्माप्य मिक्य मिक्

© 9884655618 **1** © 8072613857 **2** vdspsabha@gmail.com **3** vdspsabha.org

॥उएकास्कभा॥

विम्पिरापिल-माभु-भूण-स्ले प भिर्जिउपनिषद्यो-किषद्य रू-निण। कर्षे कलचे विभलं ग्रालं हर महुर द्विमक में मरणभी।।।।

करण-वरणलय पालय भंग रुव-भागर-म्याप-विम्न-रूम्भा। 1 एया पिल- एम न- उड़- विरं ठव मद्भर हिमिक में मरणभी॥॥

रुवडा एनडा मुलिडा रुविडा निए-वेप-वियागण-याक-भउ। कल विम्ना-सीव-विवेक-विमं ठव मर्द्भा द्विमक मे मरणभी॥॥

रुव एव रुवानि उ में निउगं मभए यउ 🗓 उमि के उकि उ। भभ वार्य भेठ-भठा-एल पि ठव मद्भर दिमिक मे मरणभी॥मा

मुन्डुणिन्ड वकण ठवंडे रुविडा भभ-ममन-लालभडा। मिउमीनिभं परिपालय भं ठव मद्भार मिक मे मरणभी॥भा

एग उी भिविद्रं किल उ क् उ वे विग्रान् भन्न-भन्भमुल उः। मिलभं मुरिवाइ विद्यामि पुरे ठव मद्भर हिमक मे मरणभागा

गुरु-पुद्भव पुद्भव-केउन उ मभउ भवउं न कि कें पि मुणी। मर १९०ग उ- व दुः ल उ दुः नि ए ठव मद्भग द्रिमिक मे मगणभागा

वैर-एर्-माभ्-परिपालन-भरा

© 9884655618 💋 🕲 8072613857 💋 🔛 vdspsabha@gmail.com 🔞 vdspsabha.org

रुर रुर मद्वर

एय एय मरुर

विम्दिर न भया विम्ह्रेक-कला न प्र किञ्चन क ञ्चनभि गुरी। म् उमेव विचिष्ठि मुपं महरं ठव मद्भग मिक मे मग्लभाग ॥ इंडि मी उरका गार विरिग्धिं मी उरका सकं मभुक्तभा॥

> एव एव मद्भा का का मद्भा एव एव मद्भा का का मद्भा। काष्ट्री-मद्भग काभकेए-मद्भग रुर रुर मद्भर एव एव मद्भर॥

क येन क एए भनमिन् यैं ब ब्रम्मप्रायद्वना वा पेक्टः श्वरावादी। करें भि यमु उर् मकलं परम् न ग यल विडि मभर्याभा यनेन प्रस्तेन मी-स्वेन्-भगभुडी-मी एर १ विवृ भा। र्छ उद्मद्गद्गार् सभ्यु।



॥विग्ठवाना एउस॥





<u>1</u>-माभु-परिपाल न-मरा

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**

In our Shrimatham at Rameshvaram, the following verse has been inscribed in stone by our Jagadguru Shri Chandrashekharendra Sarasvati Shankaracharya Swami:

The verse is based on a sentence in the Brihadaranyaka and Chandogya Upanishads. Its import is:

To reaffirm Dharma and prevent the world from instability, Shri Rama holding the Kodanda created this Setu which restrains even the sea. This is a physical representation of Dharma and shows that even such difficult feats are possible by standing in Dharma.

With the same goal, the Guru Shri Shankara Bhagavatpada, holding a Danda, created the Acharya Peetam. This is like a Setu holding against the sea of the changing world circumstances by standing in and teaching people Dharma.

As an exemplary illustration – the Rama Mandira at Ayodhya, expected by crores of Sanatana Vaidika Hindu Dharma Abhimani-s, had prana pratishtha successfully done and is now being further developed. Our Guru Shri Jayendra Sarasvati Shricharana had tirelessly worked for the same.

Let us meditate on and worship him remembering such multiple dharma karya-s that He performed.

Other Bharat-wide dharmic acts of the Acharya

As per the saying "gurum prakāshayed dhīmān", Shri Jayendra Sarasvati Shricharana installed the vigraha of Shri Bhagavatpada in all the Jyotirlinga वैद्य-एर्-माभ-परिपालन-मङ

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**





Kshetras that He had extolled.

Further He installed the divine form of Shri Bhagavatpada, the Jagadguru, in the four extremes of Bharat - Jagannatha, Kanyakumari, Gokarna seashores and Kailasa - facing the respective directions.

As per the wishes of His Guru Shri Chandrashekharendra Sarasvati Shricharana, He consoled the Sanatanis of the Kashmira Desha driven away from there, and took up laukika/vaidika efforts for their welfare.

Even in the North-East end of Bharat, He likewise did pratishtha of Shri Bhagavatpada and conducted laukika/vaidika dharma-s so that difficulty should not befall Sanatana Dharma.

वैर-एर्-माभ्-परिपालन-भरा